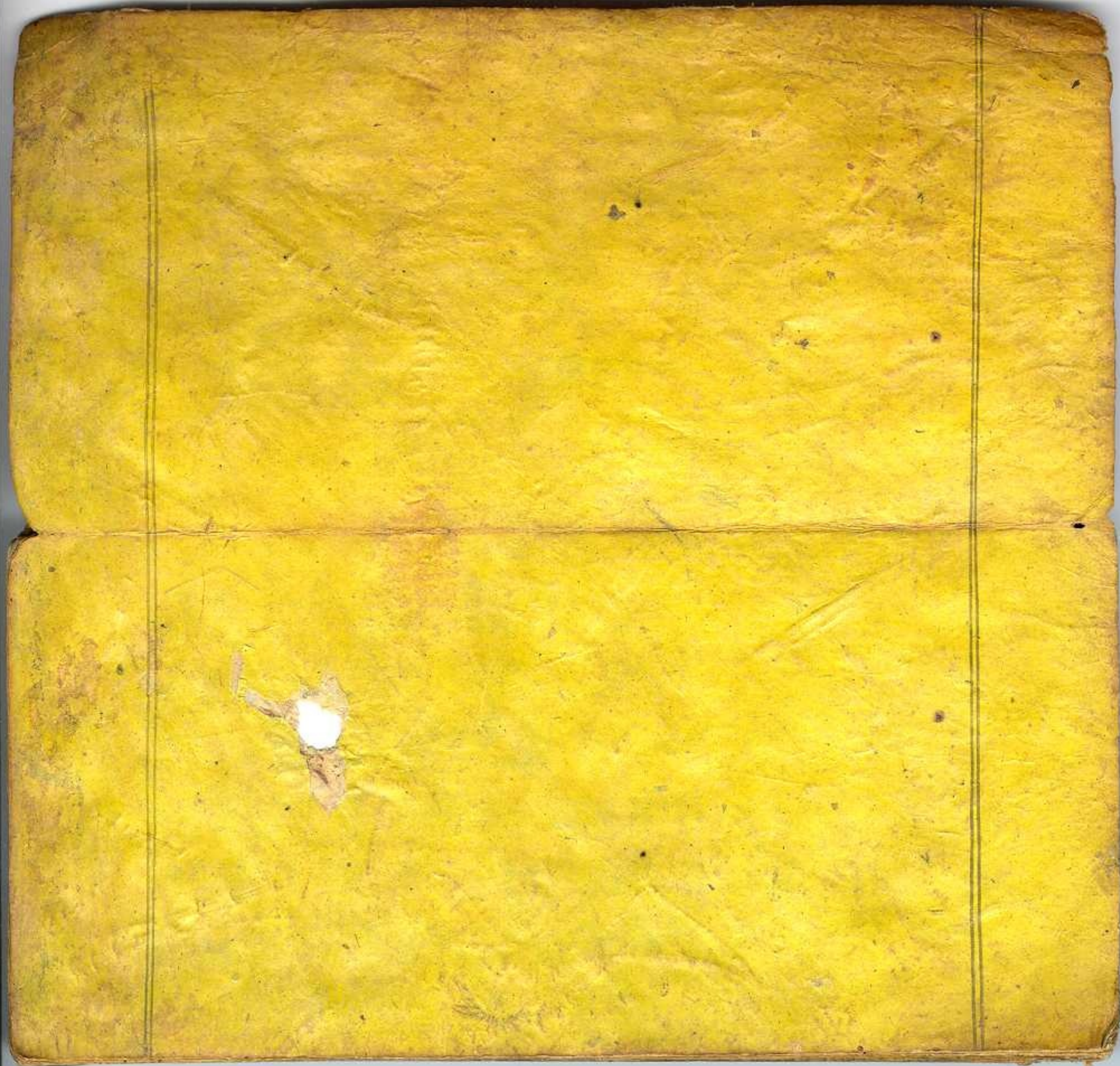


69E-II

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



मन्त्रमन्त्रः

ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ॥ त्रागहो न वि ॥ तालरुपा ॥ मध्व
मन्त्रमहा मलिकनकनाडिका पूर्वविदहजल ऊँ वृद्धी
प२ अूपन गमदायनि उक्तनकन जुवनः पञ्चवर्तु
पैव किन व्यापियात्र ॥ ॥ नमः पञ्चवर्द्ध २ विष्णु
किता विष्णु हित विष्णु हत पैव मूर्ति ॥ ॥ नृसुद्ध

पानल वहति किनमानसा हनीतु रुयति मित्रघनधा
ननूप ॥ ॥ जातश्च दनस्य या उपद्वीप ना उपद्वीप पत्रि
जानीतु दान २ वसनला उपद्वीप च उ विदिगी जुवन
वा उपद्वीप पक्षी खीत पत्र ॥ ॥ द्वित्रदवल्लभा विय
ननत्र धिनया विय सफ म्रसादन वी विद्यात्र २ अ्व
नना उ दिविय सायक वका मलि कूपनि धि निरि

आदिश्रेय

सर्वदयीति॥ ॥ गुनवचनधिवचनसंरुगतिप्रतिहाव
ना. मनकसुमउग्रपन. सरु त्रिपूजा २ अधवपत्रिहा
प्रथि. सफपत्रिपूत्रिता. रुवजलनिधितकल. संगुह
ती॥ ॥ ॥ यमजलि॥ माथ॥ ॥ आदिभूतस्वराववि
॥ य. अनिलमूनलजलरुमिसेरुव. मनुगिरवतमा ॥
२ सर्वमहेश. सीस्थिती॥ ॥ जकजकिनीसर्वगग

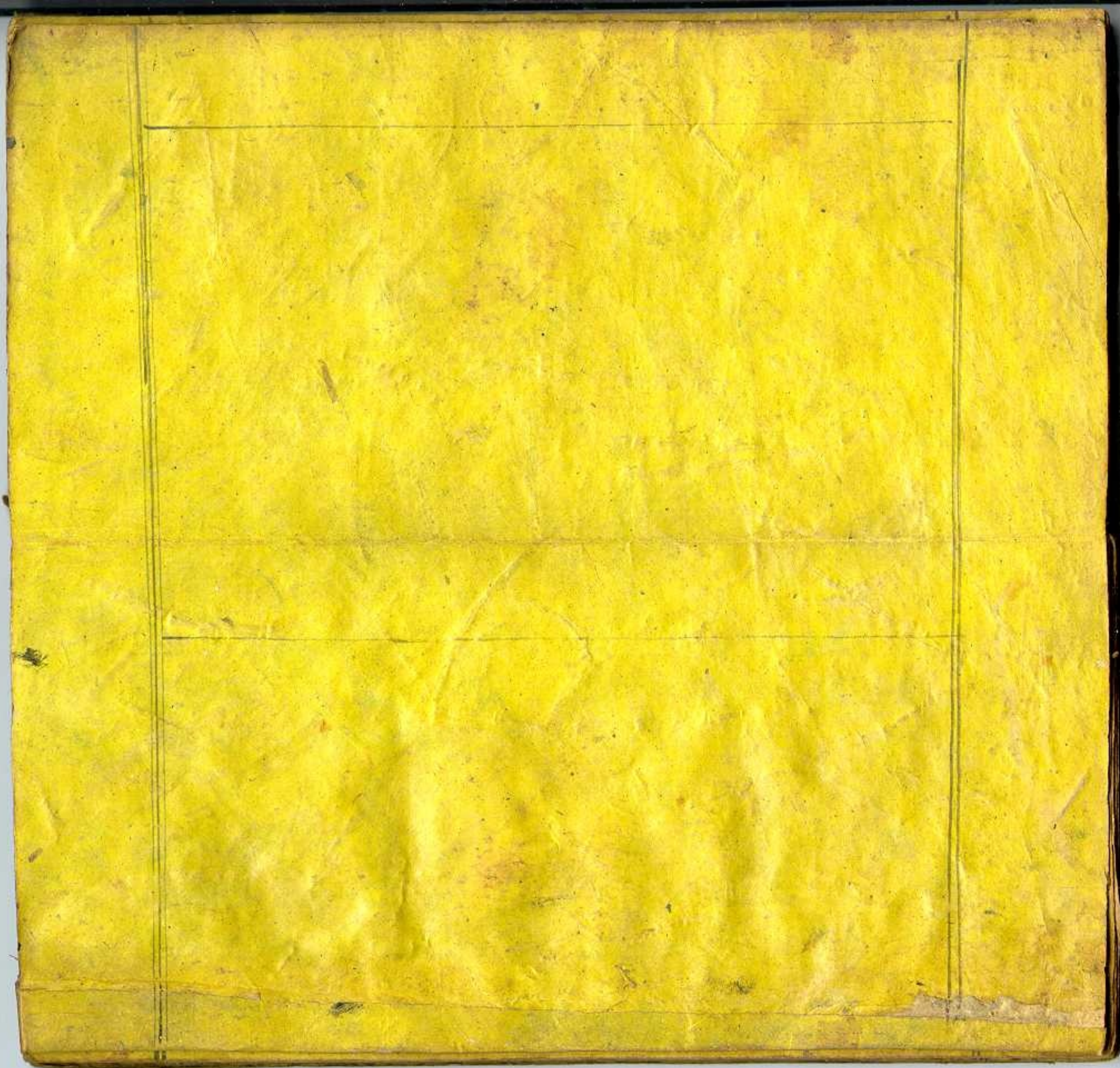
होव्यापित. पूजितवजआचार्य २ चिंतितमानसा. वा
धिस्वराव. अनुरुवसिद्धिप्रदाता॥ ॥ प्रिसमाधियाग.
मंगविन्यास २ स्वस्वदेव. पत्रिपू ॥ २ कावपाया. हो. मून
यतूप २ अहयनसर्वदिशात्र॥ ॥ विष्णुकलिगम. ध्य. ऊ.
कानजाता २ कूटागमस्वराव. विष्णुपंकजमध्य. म.
हयतूप २ सर्वदेवपतिस्थिती॥ ॥ ॥ गुनवचन. हो. ठि

श्रीगुरुभ्यो नमः

नगाधनियारु हनयितथगत वडां २ विगुवनव्या
पित तत्वस्वराव रुलिगनागग हलीना ॥ ॥ नागल
लिता ॥ मया ॥ ॥ अन्तुनतथ ता वकानस्वराव नलनू
पविकित विचित्रकलषी ॥ ॥ ॐ श्री ॥ ईकानवडा मृत
मदकी सफसी ॥ अधित ॥ ज्ञानामृतमय वडा मृतनस
वाधिरुलदायकी सर्वजिनव्यापित सहजकलषी २

ऊगातमल ॥ अधित ॥ गून्धकन ॥ अरु व सीसाननाशन
विलकुतूपी ॥ ॥ वडापत्रमाधमयगीधम्वसीयुती ॥ ॥
खसी ॥ अधित ॥ पीवपीयूषी ॥ ॥ ईकानमीठपूष्यसी ॥ अध
नी वडासीस्थपित विपाककलषी ॥ ॥ घटमलीतन
ताफरूपराव ॥ आरुतामधुकिनि ऊलरूपी २ ॥ रुटि
तिसाधनश देवता वडा ॥ ज्ञानस्त्वमानुमय ऊं

बीज की ली ॥ पाशादिभावमनदानपूत्र४४
नहीं समयसत्त्वप्रवृत्तिविमर्शकल४१महानाग
डवीहृदयवाधिविकृष्टरूपसमयसत्त्वहानवक्रप्रकी
रणी ॥ ॥



वज्रमयहमि ९

ॐ नमः श्रीगुरुवज्रसत्त्वाय ॥ नागमथमाथ ॥ ताल
इज्जमान ॥ ॥ वज्रमयहमिविलम्बधिनमधुलः मदनी
वज्रीएव वज्रवन्धरुं २ सफनसावल हमि निवसथ
मानस्यत्रसी ज्ञासकथ ॥ ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ आनयहा एगवन्

विद्यानाऊयईरुटःकंदय२अविष्कंदय॥ ॥हाट
 कनाडियविश्वियउक्कियःवडयनाकानईवेई॥
 ॥ ॥वडपअनसनईकालिगामिःवडविगानःई
 खई॥ ॥गगधनिनावन्धःकलिठविनाठयःवड
 विद्याकृतखधुन॥ ॥अष्टदिगमानपनाऊयवी

नधनःसर्वविद्याकृतखधुन॥ ॥कीउकिमधु
 लनायवीनधनःसर्वसत्वहियाप्रमादकन॥ ॥
 सतगुनआह्लाःठिनगतधनियाहनतिलीलावड
 हमिःअधना॥ ॥ ॥धनकिलेदवपूजा॥ ॥
 नागकलान॥षट्ककाल॥ ॥अवनिनिहित॥ ॥

अवनिनिरे

॥१०॥ वाग ॥ उक्तनक्षत्र-विधानकवीना-रुल्यि
अनीतनकाधन २ मानादि-ऊकादि-सगद्यपनिवा
नाठायमानादिदृष्ट ॥११॥ वाग ॥ उक्तनक्षत्रका-
अवलवीना-रुल्यिअनकनकाधन २ मानादिपि
धूलादि-सगद्यपनिवा-नाठायमानादिदृष्ट ॥
१२॥ वाग ॥ अ-नका-तर्किनाऊवीना-रुल्यि

अनीतनकाधन २ मानादि-अनलादि-सगद्यपनिवा
ना नाठायमानादिदृष्ट ॥१३॥ वाग ॥ नैर्ऋत्यका-
नीलदधुवीना-रुल्यिअनीतनकाधन २ मानादि-
ऊकादि-सगद्यपनिवा-नाठायमानादिदृष्ट ॥१४॥
॥ वाग ॥ वायुव्यका-महावलवीना-रुल्यिअनी
तनकाधन २ मानादि-पवनादि-सगद्यपनिवा-

नाठायमानादिर्वन्द्य ॥ १५ ॥ नाग ॥ उर्ध्वघात्र उष्णीष
 वीनाः रुलयिम्बुनैतनकाधन २ मानादि बुक्कादि स
 गधपनिवाना नाठायमानादिर्वन्द्य ॥ १६ ॥ नाग ॥
 मूध्रघात्र ॥ एनाऊ वीनाः रुलयिम्बुनकनकाधन
 २ मानादि मूध्रनादि सगधपनिवाना नाठायमा
 नादिर्वन्द्य ॥ १७ ॥ अ ॥ नाग ॥ दहदिहदठ रुंका

२५
 २५

नूनप्रसमानिदठकाधन २ आसापूत्र दानपति
 नः मानविघन निववानून ॥ १८ ॥ ॥ नागललित
 ॥ गालरप ॥ ॥ वीरववसंधनाः पीतवर्धनिकमुखः
 विविप्रआरुनध रुषणीया २ कनकरुडघट वाम
 कनधनी दहिन मूर्यमूडा ॥ ६४ तीवना ॥ ॥ उं
 वडी रुवरी आनसागल मूरु उं वडदठ तिष्ठ

यनप्रसादित

भदनी॥ ॥ भदनिवडी-एववडवन्धरु-विषयहन
 ससयन-निभनरुवकु॥ ॥ उक्कहिमातनि-००दमे
 र्घपूजा-ग्रन्थैगवडसत्त्वपूडिता॥ ॥ मधुलकर्मत्
 साधय२ लमधय२ डीरुं ग्रास्वाहा॥ ॥ नोमिणीधन
 इहिगः पादानविंदः विविधितपहान-पूडया मि॥
 ॥ ॥ श्रीगमकसिंहमोलिः मानवलहंडना-दविणी

वसूधना-मधुललिखामि॥ ॥ सतगुत्रचनधकमलः
 भिन्नगतधनियाः गमवीतिग्राचार्य-संघसयना॥ ॥ हूमि
 लमधनविधि-तस्यरुलदः सर्वसत्त्वहियाः सीसानतनर्ष
 ॥ ॥ ॥ ॥ नागहोत्रवि॥ तालरूप॥ निर्माधमचूड-मधु
 गतकलधमः पञ्चमृतमयः पविपूविता२ विविध
 मयगर्हिगः पञ्चपल्लवा-नीलवर्धनकः भिनसि

निर्माधमचूड

स्थपिता॥ ॐ ॥ ई ई क न ई व डा वा र्यः मनु वि
 न्यासिताः कर्म व डी सहितः ब्रह्मास्वरूपी २ व डा णि
 ष्या रि म तः प नि पू र्ण ह गु नाः ए व स मू ड त न हः जि
 क र्म इ न ह ॥ ॥ पूर्व द ल ग तः प व सू र्ण सी ना डि ताः
 प २ वि ण ति त दि नः वृ ष्ण का य ॥ ॥ द कि ष द ल ग
 त व डः ख स म स म नू पाः त्रि ए व न स म न सः उ पा

य वि णु डि ॥ ॥ प ष्चि म द ल ग तः णी ख सी ल म धि ताः
 ध व ल व द नः सि ष्ठि ता ऊ ना ॥ ॥ उ र्ध्व द ल ग तः घ ष्ठ
 धा ष ना दि ताः ह्म न स्वरूपि निः वि ष्ठ ऊ न नी ॥ ॥
 अ ग्ना दि द ल ग तः ल्ध त पी ता नू ल मः ल्ध म व र्ध न
 ऊ तः स्था पि या त्र ॥ ॥ पू ष्य वि न्या सि तः वि वि ध म य
 पू डि ताः ष ष मा मि व ड स त्वः णि न ल्ध धि ता ॥ ॐ ॥

समनय ७

२० ॥ नागमधुमता ॥ इर्जमान ॥ ॥ समनय ईरु कः क
मलनिवल ऊलः सुवर्णविलः ऊलऊवन २ प्रहृलि
तदिनमलिः सायनः गेनिः मयूकानू रुगः लीनग
ती ॥ ॐ ॥ ॐ श्री ई ई ॐ श्री ई ई ॐ श्री ई ई ॐ श्री ई ई २
मूठमालवाघुवर्मः एषितमूडाः हाहाकानः हीन
वला ॥ ॥ कलितकलिषधः मृदतनदिशुऊः

हृन्कशालिगदः नाठपदी २ विष्ठपकसियः श्रुद्ध
वडननठरिवः ॥ ॐ खनसाहियः नादवली ॥ ॥ दठ
दिषायसादिनः मानवीनध्वनः प्रिवकुलीषधः वद
मूर्ख २ समनसमहासूखः वाधियनादिः नाटकन
गदः समनसूख ॥ ॥ श्रुवध्वनपयिसहऊः श्रीसीवन
ः श्रुनूकनगगदः समनशुध ॥ ॐ ॥ २१ ॥ नागम

वज्रधनपर्व

धूमत॥ गाल इर्कमान॥ ॥ वज्रधनपर्ववृद्धः मूनि
वननायाः गऊमासन रूस्थमिडा रमलुलसूतः
पातनासी जलिः खमिवरा वस्वरावसमी॥ ॥ जा॥
ॐ ह्यतावजसूतमः प्रवठयः मलुलसूतः पातया
मि॥ ॥ क॥ सिंहसनस्थितः पूर्णवन्द्युक्तिवर्धः
अहिमगुरु रूतदायनी॥ ॥ जा॥ नलधृक्पीत

सुप्रपातया

वर्धः दहिनवनदकनः अश्वानूठ विनाजिता॥ ॥
क॥ महामलुलसूतमिडुप्रयर्धः आलानिकदहिमः
मृद्विसिद्धि॥ ॥ जा॥ धर्मवडीनकवर्धः मयूनासन
स्थितः ध्यानमूडाधनः श्रीवनाथ॥ ॥ क॥ सुप्रपात
नमः साधय रदानपतिर्न नकुवड॥ ॥ जा॥ कर्मव
डीजिनवनः अरुयमूडाधनः गनूनासन सी स्थि

सुहृदहं प्रविशति

तनयना ॥ ॥ क॥ तत्त्वज्ञानविज्ञानसिद्धिवत् महाम
उल्लसुः पातयामि ॥ २२ ॥ ॥ ॐ तिकीलनविधि
॥ ॥ अथथकायविधि ॥ गीतहं हं दह ॥ ॥
नागरुत्रवि ॥ माथ ॥ ॥ अविषय-रुगवत् महामा
पत्रवत् दधयान् रुत्र-वाधिवर्दी २ ऊनोमत्रह
यः वीधनमाचयः पत्रमा मृतमयः पत्रमगुत्र ॥ ॥

इतहयम्

क॥ उहिवत्समहा-याननया रुमः वाधिविल्लमृत्
पातन ॥ ॥ ॥ ॥ दधयिष्यहम-उमचत्रगु क्री-तथता
नृत्त-वाधिवर्दी २ ॐ सर्वतुथगत-यूज-यामिः
नियतिं यामिमः पापतन् २ पर्युपासितु-दधितप
निवर्तः कमलकलिषपत्रि-रास्वत्र २ कसूमड
दकमेकटासनकमला-जिनकुल-समयाश्रायार्थ
घातयामित-पापतन् २ पा०

नमो १०

प्रभादिता

पदं २ मन्त्राञ्जनदर्पणं नक्तं पदं दणवलगातिपद
रास्त्रन २ सतगुनवतः कर्मलप्रसादः श्रुनूकन
वाधिप्रदायकं २ एनतिपिथूमनिनासूतनः प्रह
नामिसहजानन्दन ॥ ३ ॥ २३ ॥ गीतनमहं ॥ ॥
नागमधूमथ ॥ इर्जमानं ॥ ॥ यमादितश्चादिदण
हमिसीदत्रिसनः मन्त्रमधुलसन स्थितलयना २

प्राफित
शानंद
महासूक्ति

वादणमुजवडः वदनसूक्ष्मणः वडवानाहिश्चा
लिंगम ॥ ३ ॥ ईईईईईई दणदिगमुवनः मान
सयनसीवाधियान २ ईद्वश्चास्त्रिगणः श्रुद्वयसीराव
नावयिदानः सम्वननाया ॥ ॥ कलिंगघी० गऊः
वर्मविरुषितः कनतिउमन्त्रः त्रिभूलधना २ माऊ
पुनसतकपालखट्टीः गः पाणपनसुवक्रः ३

प्रधना ॥ ॥ पञ्च जिनवनमकटशालीकृतः षट्म
 डाश्राएनसः रूषिता २ श्रालिकालिइयिः श्रालीरुवा
 पयिः व्याघ्रवर्मनिवसनः कृष्णतनू ॥ ॥ ननगिन
 मालश्रीरणीसिवनः दिव्यवकुतिनिः कनूतहिया
 २ जनमजनममानूः दुहपयिषानः सः गभवक्तिप
 नमाद्यवजगीता ॥ ॐ ॥ २१ ॥ ॥ नागविलासा ॥ ता

सहज
२२

लमाथ ॥ ॥ सहजसनातूहः हनूचनायाः प्रिनुवन
 नाथः दहिविलासा ॥ ॐ ॥ ३३ ॥ यिमहानसः शुक्राहि
 थकः कमलकुलिमः सीः आगसीराव ॥ ॥ स्नानस्व
 नूपिदिदविः विष्णव्यापिनीः कीठक्तिनमनीः महा
 सुखदाता ॥ ॥ उद्धाधषठनाडीः नूधियाप्रवः ॥
 प्राधविर्इनसः दियोगयई ॥ ॥ गुनूप्रसादः श्री



श्वगुलिपूस्कः कीवानन्दयाकूलः सतानंलोहयायमद्रकूल॥

सुखं भवति यत्र भवति सुखं भवति

६९६-II

कालिदास
१२

नूतन क्रियाः दहिमद्रा (६) सीसान समूडा ॥ अ ॥
॥ २८ ॥ नागकालयिपशुम ॥ श्रीतमाथ ॥ कालयिप
थिया उवात्रा २ मूमनित्रुर्क काला २ घनकापिथिउ
वात्रा २ कनू (६) कीयालीन लाला ॥ अ ॥ मलयउ
कन्दनूवाउयिया २ ठि ठिमन हिनवाउयिया २

तहिवाल्लखाउयिगम (६) २ मयनालावर्धयायिया
२ हलिकालिऊलसात्रिऊल २ इन्दनूवाउयियायि
या २ वउसमकसूनीणीना २ कपून्ननावर्धयायि
या २ मालिया ०० नूतन ठमलिऊल २ तहिवाल्लखा
ऊयियायिया २ धृष्टकककनक २ ठु बाठु

जिपुनप्रमथनि १४
म ६

हृन्मूनियायिया नीलसुहृन्नीगसदावयिया
२ तहिऊसनावंसंयधमाभिया ॥ क्र ॥ ॥ नाग
हृन्मनमालथ ॥ मूलमाथ ॥ ॥ जिपुनप्रमथनि
नविप्रकनापि २ दमात्रा लिंगं सूनतहृन्म
ना ॥ क्र ॥ हृदिकधुनिनसा उदितसूना हि २

अनूहृत्तहृन्नीगसदावयिया नीलसुहृन्नीगसदावयिया
धीः धीष्टसूगमनी २ नृधिनपवन्त पूत्रितवक २
पत्रेप्रकाकात्र द्यधितकलिल २ तइहृवुनारव
उपायपीयूषी ॥ ॥ घटसकवकः प्रमतिनाडी
२ नृन्मात्मसीरावं महासुखलीना ॥ ३० ॥ क्र ॥

५०४७१५

नागविहास॥माथ॥ ॥धन२धूधन.धनधन२ध
नय२वकिठिन॥ ॥क॥नद२वजधूकसमयू२
कूइन॥गस.वीनवन२॥ ॥ज॥कू२वजध
मसमय२त्वीआलालिकक^हस्निवन२॥ ॥क॥क
मुलि२दहधन२ससमाकन^मठूतः कमलवन॥

^ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ^ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ ॥ वज्रसूर्यभूतानां तमा २ इह मय समन
 सदा तु भूत ॥ ॥ क ॥ कलुकलुकमालुधन २
 हि २ तिन तिक समय २ कायनिबन्धन नृवक
 धन ॥ ॥ ॐ ॥ श्री श्री श्री प्रह्लादकसूग ॥ २ मेखल
 मधुत प्रधवना २ श्रीरुद्रा दिन वनधव

ਸਮਾਪਤ ਸੁਖ ਸੁਖ ਸੁਖ ਸੁਖ ਸੁਖ

प्रथमामिसूनतवडुठिना ॥ अ ॥ ३१ ॥ गीतहाउ
 एनस ॥ प्वडुगिनि ॥ इर्जमान ॥ ॥ हाउआएनदी
 क्रियानिनसैवन धनयिकबासिनरुसा २ उयना
 यन मीठिया ठामठामन २ सकटकठमदिगम्बना ॥
 ॥ ननमात्रव सन्धननेया २ सहउसुन्दरी मात्र

काला २ रुमविना जिन्नवडुवानाहि २ रु दामहियायिन्न
 ठमला २ ठमलितायन वनसुरुमयनः कर्पूत्रहनयिती
 वाला २ गगधनिनवा निन्न वधिन्नडादा २ मन्मधुल
 एवलीना २ उयधनखदी गङ्गादिगनासैवन प
 यिठा यिठून् एवताना २ रुमविना जिन्नवडुवानाहि
 २ उक्रविन्न २ खिन्नधना २ गमवीतिलीलावडुजायि

वक्रि २११

यावत्स-सगुत्वन-लश्राना-ध्व-समया-श्रान-द-
रु-सि-गना-मधुल-सम्बन-वज-वा-रा-हि॥ ३२॥ ना
गमा-द-गि-नि॥ क-ति॥ व-क्रि-२-मा-दि-न-दा-हि-नी-व-कु-लि
२००-स्थ-का-न-श्र-मा-द्य-सि-द्धि-न-त-त-स-ए-व-२-जी-या-णी
ह-न-व-व-ज-क-वा-न-२-ख-म-रु-म-छा-दि-न-नी-स-व
क्षि-स्व-रा-वा॥ ॥ प-श्च-२-त-थ-ग-त-क-६०-म-नि-न-००-दि-

वक्रि कुरु

सुप्रतिम १२

२-सर्व-स-त्व-उ-च्चा-नि-न-मी-त्य-व-क्रि-मू-धु॥ ॥ ०००-स्थ-
का-श्र-मा-ग-६-ति-ह-न-व-स-रु-ज-स्व-रा-वा-२-प-र्य-पा-०-उ-
च्चा-नि-न-उ-म-न-र-व-की-०-२-मा-न-०-०-ह-न-व-न-०-धु-म-
०-क-ना-०-२-रु-न-ति-०-म-त्वा-नि-श्र-रा-व-न-स्व-रा-वा-
०॥ ३३॥ गी-त-व-की-०-०-०-०॥ ॥ ना-ग-द-०-ना-म-क-
नि-मा-थ॥ ॥ सु-प्र-ति-म-धु-त-म-धु-ल-व-क्रि-२-उ-क्रि-

तच्छ्रुत्वा कविगाना ॥ सृष्टिनादिगुरुर्यमन
 कीर्तादनुवर्गीतवन्नमनाह ॥ ॥ पर्ववृद्धात्मक
 सर्वज्ञा यैः पठ्यते ताटक विष्णु कदिव्य ॥ ॥ य
 ग्रहिष्कमहासुहतामा २ नृत्यगिष्कमन्नकनस
 ना ॥ ॥ अवकयानमहि कितेहिहः माथयन्निव
 नरुडवनीयी ॥ ॥ काधिवान्नवनकाधियुद्धकै २

जस्रनिदानरुवपूस्वयेह ॥ ॥ वध्यतियनङ्गनापवि
 माविताः तनवृद्धैः ॥ ॥ काधिविरावनयाविपनीति
 मिर्दसकलप्रमाद ॥ ॥ तनाहः तनाहः तनाहः
 ह ॥ ॥ धनसिक्तावायाविधि ॥ गीतप्रिदलसनात्र
 ह ॥ ॥ दवपूजा ॥ गन्धनरुनवि ॥ रपा ॥ ॥ हनमिन
 मकूटः किनटिमसिगसितवनहशम् २ साहि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

यवजसत्त्वपत्रमध्वनपद्मपदी॥ ॥ गमछसुनि
वहपिथिकै॥ भगतदहधन॥ ॥ वानिदुखलनवा
निशुकागतपद्मकृगम२साहियवजसत्त्वपत्रम
ध्वनपद्मपदी॥ ३०॥ ॥ नागहेनवि।ष्टय॥ ॥ छि
पुवनकालितमूत्रातिश्रुननायनसत्यवति२नाय
यिवजसत्त्वपत्रमध्वनलीनवति॥ ॥ नस्मिसह

सप्तवति २

ब्राह्मण १

पिविष्मल

अकिनघंषाठठासूर्यसाहास्यवगि२वक्रविधनूप
 विष्मलश्रुनूनायनतत्ववती॥ ३८॥ ॥इतरुय॥
 त्रिदलसप्तशत्रुह॥ ॥धनउदितातल॥ ॥ऊर्यवाक
 सि॥ ॥धनपूरुषविधि॥ ॥नागगीधनशेनवि॥रुपा॥
 त्रिनिनायनवपुर्वक्रविहाना२कनरुषष्टिस्थानमीग
 लहाम॥५॥हामकनेयाउहामनहिवउमाना२॥नाग

उदिगात २२
रुपंवाक २३
त्रिनि
अयन

द्यमाह वंघिप्रकादिया ॥ ॐ ॥ वामदहिनकनः सूत्रवयि
 पात्रा २ कलितवजानलः आकृतिकनिया ॥ ॐ ॥ प्रह्लाद ०
 उपायिप्रवडि २ नविगमिम धुलः आवायवयिथया ॥ ॐ ॥
 कर्णवालकः मूषितनहाम ॥ वायुसंघघिप्रः वियागहा
 ग्वा ॥ ॐ ॥ नागक ॥ माथ ॥ कायिप्रवैधम वादिप्रवध्म २
 मूत्रहृत्तर्वदवः प्रियुवनलीना ॥ ॐ ॥ मूत्रपमवडिप्रः

कहयतीति २

दान्त्रकनयिया २ हदिप्रमृद्धिसिद्धिः प्राहिप्रसादा ॥ गी
 मममूना ॥ उद्यति २ गगलभिरवनमा ॥ प्रवदाहिदा
 ना ॥ ॥ उदिलगनावडा नविमृष्टी ॥ गरखमिननविगमि
 गगलद्वाना ॥ ॥ प्रवनपीवालः उकुलगनवैधम २ विप
 निप्रिकनूकः दान्त्रकसिद्धा ॥ ॐ ॥ ॥ नागहं ववमालगी
 ॥ इडमान ॥ ॥ धूमीगमिः वधुकनाली २ हीमार्प
 तकनूम् २

श्रीमद्भागवि २६

गल कलम. गिनयन॥ ६॥ रुं ऊ थिया॥ ॥ रुं ऊ. स
रुग स इ प्रि २ ननाता व्यान वे. महावल्लि पूजा॥ ३॥
रुं रुं रुं रुं वउमान विना गिता २ रुं रुं रुं रुं क. वि
घनिषवान ॥ ६॥ ॥ समया आन रुं रुं. आगम म्वनी देवी
२ वरुं निवर्तुलि. वउमूख वयन॥ ६॥ ॥ सित कंका
न रूप. रुं रुं वलि लम २ ओहि कनीक. समा कल लम वदन

हे॥ ॐ॥ तूडमहावलि. पितृवनलगह २ मयमत्स्यम
स-तूधिनश्राहान॥ ॐ ॥ ॥

नमः श्रीवज्रसत्वाय ॥ नमः श्रीवक्रसैवनाय ॥ नमः
श्रीपद्मनृत्यध्यानाय ॥ ॥ कृ॥ धवलः सुधमय ॥ ॥
॥ कमलः वनः समुदित २ गङ्गा ॥ कृ॥ सहस्रः कनः

नमस्तुते २०

समनसि राधा ॥ ॥ जा ॥ समाधि गुह्य श्रुद्वय रहन
॥ ॥ क ॥ सुखी त्रिमनः जिन वन रुषित ॥ ॥ जा ॥
दह धन तथगा रसियुत ॥ ॥ क ॥ कत्रुध नस मू
दित विकारिण ॥ ॥ जा ॥ धर्म तनू ति कुवन र
जय जय ॥ ॥ क ॥ कलिष कन भू न्य नृपि ति ॥

जा ॥ श्री वड सत्व पत्रम गुत्र ॥ ॥ धर्म दि यां सगं
न को मं रूपां रं स जो नं पू रं इ कं लो विं लां सी रं
जि नं नु मां ता जि नं स दं त्री तां रं न मा मि तां न
कं लिं लो वं त्री तां रं ॥

उद्ध
उद्ध
अन
अन
अन
अन

क वि उ ६ प्र यमा

वा
महा
प
प
वर

न
उ
न



Handwritten text or signature, possibly a date or name, written vertically next to the circular stamp.

पूर्वदलगत
पंचमहापात्र

ननी॥ ॥ पूर्वदलगत न क व र्ण गी २ ॥ न न या मि नि द वी नी
ल व र्ण गी ॥ ॥ बा म व्य मा हि नि द वी सि ते व र्ण गी २ प चि भ र्ण वा
नि सि द वी ज मे न व र्ण गी ॥ ॥ ने र्ण गी सि नि द वि ह नि त व
र्ण गी २ द ह न वी ठि क द वि भू म व र्ण गी ॥ ॥ व र्ण गी क व कान न
प व मू डा रु न ॥ ॥ व र्ण गी क व न न ना नि दि गी व ना ॥ ॥ ॥
ना ग प र्ण गी ॥ ॥ व र्ण गी ॥ ॥ व र्ण गी ॥ ॥ व र्ण गी ॥ ॥
न २ द ग दि ग द ग व ल आ ना चि या न ॥ ॥ वी न वी न व यि

नीलवर्ण

स्थान मीठुलमाहति विष्णु हस्त्रिया २३ ईकाना वसिदान्तद
विदानपतियो विष्णुनिवातयो ॥ मत्तधृष्टीसंवत मारुकात्
बकु हवडा काय विष्णु हस्त्रिया २३ आग आगिति मत्रिया विष्णु
ऊननि समया श्रान्तिद एतयि हायि ॥ सिंहनादवाजियान उ
मनूषसाद श्रुत आगिति दानपूष्प ॥ जालीधनिपूत मवधूव
नयिया कर्तृपावन एत तिहायि ॥ अ ॥ ना कनदि ॥ षड् ॥ ॥
नीलवर्णान उ हस्त्रिा किन ए २ उद्धीर्षिग लकंश धी हवडा नाया

षट्पुत्र

॥ अ ॥ नीलवर्ण दवी कनतिकपात्मा २ उगतमा ऊकानी शु
नेनात्मा ऊनती ॥ ॥ का अवीन दृष्टि आग्निगत समाधि २ धा उ
॥ उऊ कनट कधनिया ॥ ॥ एस्म विष्णु धित घस्म मुद्रा एत
२ व्या प्रवर्म निवृष्टि तनन मित्रमात्मा ॥ ॥ वक्राम हृग्वन ना
नाय ए ० ई २ वापयिव उवन ए व तुम नमर्दनी ॥ अ ॥ ॥
लुत्तिता ॥ ए ० ॥ ॥ षट्पुत्र ३ ० ए ० ॥ अन्त्य ० पूरु कवाप्त ॥ निधि ० न
लर्म ० हर्वकि ० रक्ति महरू ॥ अ ॥ नमामि २ शुवि ० नल आ ० दृष्टि

॥ कनकवर्णनक्षत्रमकयामलि ललितश्री ० दानिडहनसी ॥ उई
 त्थागत दक्षिणलोकायन वामवज्रपाणि ० सादवी ॥ ॥ ऊवसज
 सुड नीलवर्ण वामवन्धु गुह्यवर्ण ॥ ॥ विविक्तीउली कलिमा
 लिनी मुखेंडदवी गुह्यवन्धु ॥ ॥ वामनदुग्धजपताकेशादि
 हस्तधनि चतुनदवी ॥ ॥ पूर्वमाहि दधूर्ण पश्चिमधनदा व
 गुह्यवन्धु ॥ ॥ गुफा सुगुफा सुनस्वतिदवी चंद्रकी कान भाऊ
 दा ॥ ॥ सगलमीठल पूजितिय गुगुतिमगु ति एवैउत ॥ अ ॥

नीलवर्ण वानर

नागकनदि ॥ षट्की ॥ ॥ नीलवर्ण वानरदवी चक्रिकीउलकीठि
 रनाचकमखल लुषितनूपधनिता २ सुसमानसं हकिसेपू
 किता २ स्वस्ववीजाकुने १ समस्यनादवी मामकी ॥ अ ॥ न
 मामि २ दवी श्रीमामकि २ नवजीवनीदवी प्रिनप्रसूनसी
 दनी ॥ ॥ पक्षीकीरं भृगुपात्र २ सुनासूननन वं
 दितवनरी ॥ अ ॥

मौक्तिक
ॐ

नागदक्षिणगुणविष्णु॥ ताल॥ ॥ पीतवर्णमामकिंद्वीविष्णु
पिता२ अमृतपातनवाग्नीदेवी॥ ॐ ॥ नवजोवन॥ उल्लस
नसंदनी२ स्वस्तीजाऊनसमस्तना॥ ॥ वकिंकुंडलकीर्तिनृप
कर्मवला२ लकुटसंयुक्तगणविहृषिता॥ ॥ नमामिवाग्नी
देवी॥ सुनयनी॥ पूज्यामिधमनावाकिता॥ ॥ सत्यनृप
प्रसामिहका२ अनुरक्तसिद्धिभाकुप्रद॥ ॐ ॥ नागक
रु॥ मङ्ग॥ ॥ हेनितवर्णवाग्नीदेवी२ त्रिगुवनदहिमंजु

मौक्तिक
ॐ

मौक्तिक
ॐ

गातमाता॥ ॐ ॥ महानसचिवयिनमहासुरवर्षालिया२ व
डादविरुसिया॥ अनुरक्तहात॥ ॥ उर्ध्वनाडिप्रदलेकम
लसंथा॥ ग२ दहिविलासपवनसिंहदिया॥ ॥ पुंजयित्रीपव
महासुरवर्षालिया२ पयमित्रसवीर्यवानृषि॥ ॥ सत्यनृप
साद॥ वेगुधरिहिक॥ डाल॥ ध्वनी॥ सैसानसमूडा॥ ॐ ॥ ॥
नागताटक॥ रुमि॥ ॥ नीलवर्णकमख॥ त्रिनयनसंदनी
२ कनकि॥ कनधनितदेवी॥ ॐ ॥ नावयिणीहृदय॥ ठाकि

हनितावस्थेगी

नीदवी॥ ॥ त्वीदवी०० दुखेठ आगिनीदवी॥ ॥ मीउपाठुठिमुव
नमीठितादवी२ विसोसिनीवृद्ध अकिनीदवी॥ ॥ चक्रिकुठ
लकीठि० हृषितदहा० तु क्रैदवनसुक सर्वनदिसु॥ ॥ अत्रल
नसिद्धि० माकुप्रदायनी२ तु क्रैदवीनविमसि अकिनीदवी॥ ॥ ॥
॥ ॥ करु॥ वक्र॥ ॥ हनितावस्थेगी० प्रिनयनसूदनी२ नव
योवन० नावस० ॥ ॥ ॥ ॥ तु क्रैदवीमामकि० वानुशीद
वी२॥ ॥ अष्टदधुजा० हलनीठुकिन० ॥ २ पीवव

पूर्वपीथगत

द्वस्वरूपा० तु क्रैयागिनी० ध्वनी॥ ॥ ॥ ॥ हकात्रसहनिता
वर्ष० हाकानसिधनाशन२ डीकानवीजहीता० अमृता
कानी॥ ॥ ॥ ॥ ॥ सतगुत्रवन० ॥ ॥ ॥ ॥ मित्रगताधनिया२ हन
मिसिद्धिवज० वजावास्थेगी॥ ॥ ॥ ॥
००० नापूजासहालमागू॥ ॥ ॥ ॥ ॥ नागकरु॥ ॥ ॥ ॥ तालमाथ॥
पूर्वपीठगत० वक्रायलीदवी० अक्रुष्टुधन० हिसा

सुनी॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
उत्तमपी० गतः नृणां यत्नोदयः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
यासुनी॥ ॥ पश्चिमपिथिगतः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
कृष्णधनः गङ्गासुनी॥ ॥ ॥ दक्षिणपिथि
गतः वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

हासुनि॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
गङ्गाधनः मयूनासुनि॥ ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
विष्णुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ वायुव्य
पी० गतः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सुनी॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥